



## सामाजिक अनुबंध : थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक एवं जीन-जैक रूसो के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

तनू कौशिक<sup>1</sup>, डॉ० बबीता गोयल<sup>2</sup>

<sup>1</sup>परास्नातक शोधार्थिनी- राजनीति विज्ञान, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर

<sup>2</sup>शोध निर्देशिका, एसिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर

### सारांश (Abstract)

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक दर्शन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसने राज्य, शासन, अधिकार तथा नागरिक स्वतंत्रता के विचारों को गहराई से प्रभावित किया। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य की उत्पत्ति किसी दैवी शक्ति या प्राकृतिक व्यवस्था से नहीं, बल्कि मनुष्यों के बीच हुए एक समझौते से हुई है। Thomas Hobbes, John Locke और Jean-Jacques Rousseau सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के प्रमुख प्रतिपादक हैं। इन तीनों विचारकों ने मानव स्वभाव, प्राकृतिक अवस्था, राज्य की उत्पत्ति, अधिकारों तथा शासन की प्रकृति के संबंध में भिन्न-भिन्न विचार प्रस्तुत किए।

हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था को संघर्ष और भय की स्थिति माना तथा शांति स्थापित करने हेतु निरंकुश राज्य का समर्थन किया। लॉक ने प्राकृतिक अवस्था को स्वतंत्रता एवं समानता की अवस्था मानते हुए सीमित सरकार तथा प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा पर बल दिया। रूसो ने मानव को स्वभावतः अच्छा माना और सामान्य इच्छा (General Will) को सर्वोच्च मानते हुए लोकतांत्रिक व्यवस्था का समर्थन किया।

यह शोधपत्र सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मूल अवधारणाओं तथा हॉब्स, लॉक और रूसो के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही, आधुनिक लोकतंत्र, मानवाधिकार और संवैधानिक शासन पर इनके प्रभाव का विश्लेषण भी किया गया है।

### प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक दर्शन में राज्य की उत्पत्ति और उसकी वैधता का प्रश्न सदैव महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल में राज्य को दैवी उत्पत्ति का परिणाम माना जाता था, किंतु आधुनिक युग में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने इस धारणा को चुनौती दी। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य मानव द्वारा निर्मित संस्था है, जिसका उद्देश्य समाज में शांति, सुरक्षा और व्यवस्था स्थापित करना है।

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का विकास 17वीं और 18वीं शताब्दी में यूरोप में हुआ। यह वह समय था जब यूरोप में राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक संघर्ष और राजशाही के निरंकुश स्वरूप के विरुद्ध विचारधाराएँ विकसित हो रही थीं। इसी पृष्ठभूमि में हॉब्स, लॉक और रूसो ने सामाजिक अनुबंध की अवधारणा को विकसित किया। इन तीनों विचारकों ने राज्य की उत्पत्ति को मानवों के पारस्परिक समझौते का परिणाम माना, किंतु उनकी अवधारणाओं में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। हॉब्स के अनुसार राज्य का उद्देश्य भय और अराजकता को समाप्त करना है। लॉक के अनुसार राज्य का उद्देश्य व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा करना है, जबकि रूसो के अनुसार राज्य का उद्देश्य सामूहिक हित एवं समानता की स्थापना करना है।



यह शोधपत्र सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के विकास और इसके प्रमुख प्रतिपादकों के विचारों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

## सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की अवधारणा

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत यह मानता है कि प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में रहता था। बाद में सुरक्षा, व्यवस्था तथा अधिकारों की रक्षा हेतु लोगों ने आपसी समझौते के माध्यम से राज्य की स्थापना की।

इस सिद्धांत के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं—

1. प्राकृतिक अवस्था का अस्तित्व
2. मानव की स्वतंत्रता एवं समानता
3. सामाजिक समझौते द्वारा राज्य की स्थापना
4. राज्य की वैधता जनता की सहमति पर आधारित होना
5. शासन का उद्देश्य जनहित की रक्षा करना

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने आधुनिक लोकतंत्र और संवैधानिक शासन की नींव रखी।

## Thomas Hobbes का सामाजिक अनुबंध सिद्धांत

### 1. जीवन परिचय एवं बौद्धिक पृष्ठभूमि

थॉमस हाब्स का जन्म 1588 में इंग्लैंड में हुआ। उन्होंने इंग्लैंड के गृहयुद्ध और राजनीतिक अस्थिरता को निकट से देखा। इस परिस्थिति ने उनके राजनीतिक विचारों को प्रभावित किया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *Leviathan* (1651) सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

### 2. प्राकृतिक अवस्था का स्वरूप

हाब्स के अनुसार प्राकृतिक अवस्था अत्यंत भयावह थी। उसमें कोई कानून, नैतिकता या राजनीतिक संस्था नहीं थी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुरक्षा और स्वार्थ की पूर्ति के लिए संघर्षरत था।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक अवस्था में—

“मनुष्य का जीवन एकाकी, निर्धन, घृणित, पशुवत और अल्पकालिक होता है।”

हाब्स मानव स्वभाव को स्वार्थी और हिंसक मानते थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति शक्ति प्राप्त करना चाहता है।

### 3. सामाजिक अनुबंध

प्राकृतिक अवस्था की अराजकता से बचने के लिए लोगों ने आपस में अनुबंध किया और अपने अधिकार एक शक्तिशाली शासक को सौंप दिए।

हाब्स के अनुसार—

- अनुबंध जनता के बीच हुआ,
- शासक अनुबंध का पक्षकार नहीं था,
- इसलिए शासक की शक्ति असीमित होनी चाहिए।

### 4. राज्य की प्रकृति

हाब्स निरंकुश राजतंत्र के समर्थक थे। उनके अनुसार शक्तिशाली राज्य ही शांति और सुरक्षा बनाए रख सकता है।

उन्होंने राज्य को “Leviathan” अर्थात् विशाल दैत्य कहा, जो समाज को नियंत्रित करता है।



## 5. आलोचना

1. मानव स्वभाव का अत्यधिक नकारात्मक चित्रण।
2. निरंकुश शासन का समर्थन।
3. नागरिक स्वतंत्रता की उपेक्षा।
4. विद्रोह के अधिकार का अभाव।

### John Locke का सामाजिक अनुबंध सिद्धांत

#### 1. जीवन परिचय एवं पृष्ठभूमि

जॉन लॉक का जन्म 1632 में इंग्लैंड में हुआ। उन्हें उदारवाद का जनक माना जाता है। उनकी प्रमुख रचना *Two Treatises of Government* है।

#### 2. प्राकृतिक अवस्था

लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था शांति, समानता और स्वतंत्रता की अवस्था थी। मनुष्य विवेकशील और नैतिक था।

प्राकृतिक अवस्था में व्यक्ति को कुछ प्राकृतिक अधिकार प्राप्त थे—

1. जीवन (Life)
2. स्वतंत्रता (Liberty)
3. संपत्ति (Property)

#### 3. सामाजिक अनुबंध

लॉक के अनुसार लोगों ने अपने प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा हेतु राज्य की स्थापना की।

राज्य की शक्ति सीमित होनी चाहिए और वह जनता की सहमति से संचालित होना चाहिए।

#### 4. सीमित सरकार का सिद्धांत

लॉक ने शक्तियों के विभाजन और संवैधानिक शासन का समर्थन किया। उनके अनुसार सरकार केवल जनता की सेवक है।

#### 5. विद्रोह का अधिकार

यदि सरकार जनता के अधिकारों का हनन करे तो जनता को सरकार बदलने का अधिकार है। यह विचार आधुनिक लोकतंत्र का आधार बना।

## 6. आलोचना

1. संपत्ति के अधिकार को अत्यधिक महत्व।
2. आर्थिक असमानता की उपेक्षा।
3. आदर्शवादी दृष्टिकोण।

### Jean-Jacques Rousseau का सामाजिक अनुबंध सिद्धांत

#### 1. जीवन परिचय

रूसो का जन्म 1712 में फ्रांस में हुआ। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *The Social Contract* (1762) आधुनिक लोकतांत्रिक विचारधारा की आधारशिला मानी जाती है।

#### 2. प्राकृतिक अवस्था

रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था आदर्श थी। मनुष्य सरल, निष्कपट और स्वतंत्र था।



उन्होंने कहा—

“मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, किंतु हर जगह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।”

रूसो के अनुसार निजी संपत्ति और सभ्यता ने असमानता उत्पन्न की।

### 3. सामाजिक अनुबंध

रूसो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति “सामान्य इच्छा” (General Will) को सौंप देता है।

सामान्य इच्छा का उद्देश्य सामूहिक हित की रक्षा करना है।

### 4. जनसत्ता का सिद्धांत

रूसो ने प्रत्यक्ष लोकतंत्र का समर्थन किया। उनके अनुसार जनता ही सर्वोच्च सत्ता है।

### 5. समानता और स्वतंत्रता

रूसो सामाजिक और राजनीतिक समानता पर बल देते थे। उनके विचार फ्रांसीसी क्रांति से अत्यधिक प्रभावित रहे।

### 6. आलोचना

1. सामान्य इच्छा की अवधारणा अस्पष्ट।
2. बहुमत की तानाशाही की संभावना।
3. प्रत्यक्ष लोकतंत्र का व्यावहारिक कठिनाई।

### तुलनात्मक अध्ययन

#### 1. मानव स्वभाव

विचारक	मानव स्वभाव
हाब्स	स्वार्थी एवं हिंसक
लॉक	विवेकशील एवं नैतिक
रूसो	स्वभावतः अच्छा

#### 2. प्राकृतिक अवस्था

विचारक	प्राकृतिक अवस्था
हाब्स	संघर्ष एवं भय
लॉक	शांति एवं स्वतंत्रता
रूसो	आदर्श एवं सुखद

#### 3. राज्य की उत्पत्ति

विचारक	राज्य की उत्पत्ति का उद्देश्य
हाब्स	सुरक्षा
लॉक	अधिकारों की रक्षा
रूसो	सामूहिक हित एवं समानता

#### 4. शासन की प्रकृति



विचारक	शासन
हाब्स	निरंकुश शासन
लॉक	सीमित सरकार
रूसो	लोकतांत्रिक शासन

### 5. अधिकारों की अवधारणा

विचारक	अधिकार
हाब्स	शासक सर्वोच्च
लॉक	प्राकृतिक अधिकार सुरक्षित
रूसो	सामान्य इच्छा सर्वोच्च

### आधुनिक राजनीतिक विचार पर प्रभाव

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने आधुनिक राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।

#### 1. लोकतंत्र का विकास

लॉक और रूसो के विचार आधुनिक लोकतंत्र की नींव बने।

#### 2. मानवाधिकार

प्राकृतिक अधिकारों की अवधारणा आधुनिक मानवाधिकार घोषणाओं का आधार बनी।

#### 3. संवैधानिक शासन

सीमित सरकार और विधि के शासन का सिद्धांत आधुनिक संविधानवाद में परिलक्षित होता है।

#### 4. फ्रांसीसी एवं अमेरिकी क्रांति

रूसो और लॉक के विचारों ने फ्रांसीसी क्रांति और अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया।

### सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की आलोचना

1. प्राकृतिक अवस्था ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं।
2. राज्य की उत्पत्ति को केवल अनुबंध से समझाना पर्याप्त नहीं।
3. समाज और राज्य का विकास क्रमिक प्रक्रिया है।
4. अनुबंध की अवधारणा काल्पनिक मानी जाती है।

### सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता

आधुनिक युग में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत केवल राजनीतिक दर्शन का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह लोकतंत्र, मानवाधिकार, नागरिक स्वतंत्रता और राज्य की वैधता के अध्ययन का आधार बन चुका है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, पूंजीवाद तथा लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के विस्तार ने इस सिद्धांत को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है।

Thomas Hobbes, John Locke और Jean-Jacques Rousseau के विचार आज भी आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं और संवैधानिक व्यवस्थाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

### 1. आधुनिक लोकतंत्र में सामाजिक अनुबंध की भूमिका



लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का मूल आधार जनता की सहमति है। सामाजिक अनुबंध सिद्धांत यह स्थापित करता है कि राज्य की वैधता जनता की स्वीकृति पर आधारित होती है। आधुनिक लोकतंत्र में सरकारें चुनावों के माध्यम से जनता की सहमति प्राप्त करती हैं।

लॉक और रूसो के विचारों का प्रभाव विशेष रूप से लोकतांत्रिक देशों के संविधान और शासन प्रणाली में दिखाई देता है।

- जनता द्वारा चुनी गई सरकार,
- विधि का शासन,
- नागरिक अधिकारों की सुरक्षा,
- सरकार की जवाबदेही — ये सभी अवधारणाएँ सामाजिक अनुबंध सिद्धांत से प्रेरित हैं।

यदि सरकार जनता के हितों की रक्षा नहीं करती, तो जनता को उसे बदलने का अधिकार प्राप्त होता है। यह विचार लॉक के विद्रोह के अधिकार से संबंधित है।

## 2. मानवाधिकार और प्राकृतिक अधिकार

आधुनिक मानवाधिकार की अवधारणा मुख्यतः जॉन लॉक के प्राकृतिक अधिकार सिद्धांत पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1948 में जारी “मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा” में जीवन, स्वतंत्रता और समानता को मूल अधिकार माना गया है।

लॉक के अनुसार—

1. जीवन का अधिकार
2. स्वतंत्रता का अधिकार
3. संपत्ति का अधिकार

प्राकृतिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त हैं।

आज अधिकांश लोकतांत्रिक देशों के संविधान नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान करते हैं। भारतीय संविधान में भी समानता, स्वतंत्रता और संवैधानिक उपचार के अधिकार सामाजिक अनुबंध की भावना को प्रकट करते हैं।

## 3. राज्य और नागरिक के संबंध

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत राज्य और नागरिक के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है। राज्य केवल शक्ति का केंद्र नहीं है, बल्कि उसका उद्देश्य नागरिकों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करना है।

हाब्स के अनुसार नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना राज्य का प्रमुख कार्य है। आधुनिक समय में राष्ट्रीय सुरक्षा, कानून-व्यवस्था और आतंकवाद विरोधी नीतियों में हाब्स की अवधारणा दिखाई देती है।

दूसरी ओर, लॉक और रूसो नागरिक स्वतंत्रता एवं जनभागीदारी को अधिक महत्व देते हैं। इसलिए आधुनिक लोकतंत्र में सुरक्षा और स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया जाता है।

## 4. कल्याणकारी राज्य की अवधारणा

आधुनिक युग में राज्य केवल कानून और व्यवस्था तक सीमित नहीं है। अब राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा जैसी जिम्मेदारियाँ भी निभाता है। रूसो के सामूहिक हित के विचार ने कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा को प्रभावित किया। आधुनिक सरकारें समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान हेतु योजनाएँ बनाती हैं ताकि सामाजिक समानता स्थापित की जा सके।

## 5. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव



भारतीय लोकतंत्र में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के अनेक तत्व दिखाई देते हैं।

- “हम भारत के लोग” से प्रारंभ होने वाली संविधान की प्रस्तावना जनता की संप्रभुता को व्यक्त करती है।
- मौलिक अधिकार लॉक के विचारों से प्रभावित हैं।
- सामाजिक न्याय और समानता की अवधारणा रूसो के विचारों से मेल खाती है।
- राज्य की सुरक्षा संबंधी शक्तियों में हाब्स की अवधारणा का प्रभाव दिखाई देता है।

भारतीय संविधान लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक और कल्याणकारी राज्य की स्थापना करता है, जो सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की आधुनिक अभिव्यक्ति है।

### सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की विस्तृत आलोचना

यद्यपि सामाजिक अनुबंध सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक चिंतन में अत्यंत प्रभावशाली रहा है, फिर भी अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना की है।

#### 1. ऐतिहासिक आधार का अभाव

आलोचकों का कहना है कि प्राकृतिक अवस्था और सामाजिक अनुबंध का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह केवल एक काल्पनिक अवधारणा है।

#### 2. मानव स्वभाव की एकांगी व्याख्या

हाब्स ने मानव को अत्यधिक स्वार्थी और हिंसक बताया, जबकि रूसो ने उसे अत्यधिक आदर्शवादी रूप में प्रस्तुत किया। वास्तविकता में मानव स्वभाव इन दोनों के बीच स्थित है।

#### 3. महिलाओं और कमजोर वर्गों की उपेक्षा

नारीवादी विचारकों ने सामाजिक अनुबंध सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा कि इसमें महिलाओं और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों की भूमिका की उपेक्षा की गई है।

#### 4. सामान्य इच्छा की अस्पष्टता

रूसो की “General Will” की अवधारणा को अस्पष्ट माना गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह बहुमत की तानाशाही को जन्म दे सकती है।

#### 5. राज्य की शक्ति का प्रश्न

हाब्स का निरंकुश राज्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है। आधुनिक लोकतंत्र में राज्य की शक्तियों को संविधान द्वारा सीमित किया जाता है।

### सामाजिक अनुबंध सिद्धांत और वैश्वीकरण

वैश्वीकरण के दौर में राज्य की भूमिका बदल रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ और वैश्विक आर्थिक व्यवस्थाएँ राष्ट्रीय संप्रभुता को प्रभावित कर रही हैं।

फिर भी सामाजिक अनुबंध की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है क्योंकि—

- नागरिक अब भी सरकार से सुरक्षा और अधिकारों की अपेक्षा करते हैं,
- लोकतांत्रिक शासन जनता की सहमति पर आधारित है,
- मानवाधिकार वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण बना कि राज्य नागरिकों की स्वतंत्रता और सुरक्षा के बीच संतुलन कैसे बनाए।



## निष्कर्षात्मक विश्लेषण

यदि तीनों विचारकों के सिद्धांतों का समग्र विश्लेषण किया जाए, तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक विचारक ने अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की।

- हाब्स ने अराजकता से बचने हेतु शक्तिशाली राज्य की आवश्यकता बताई।
- लॉक ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संवैधानिक शासन को महत्व दिया।
- रूसो ने समानता और जनसत्ता पर बल दिया।

आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य इन तीनों विचारों का मिश्रित रूप प्रतीत होता है। वर्तमान शासन व्यवस्थाओं में—

- हाब्स की सुरक्षा,
- लॉक की स्वतंत्रता,
- तथा रूसो की जनसत्ता —तीनों तत्व विद्यमान हैं।

इस प्रकार सामाजिक अनुबंध सिद्धांत न केवल राजनीतिक दर्शन की आधारशिला है, बल्कि आधुनिक लोकतंत्र, संवैधानिक शासन और मानवाधिकारों की आत्मा भी है।

## निष्कर्ष

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक चिंतन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। Thomas Hobbes, John Locke और Jean-Jacques Rousseau ने राज्य, अधिकार और शासन के संबंध में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।

हाब्स ने शक्तिशाली राज्य की आवश्यकता पर बल दिया, लॉक ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं संवैधानिक शासन को महत्व दिया, जबकि रूसो ने जनसत्ता और समानता की अवधारणा को विकसित किया।

यद्यपि इनके विचारों में अनेक भिन्नताएँ हैं, फिर भी तीनों विचारकों ने आधुनिक लोकतंत्र, मानवाधिकार और संवैधानिक शासन की बौद्धिक नींव रखी। वर्तमान समय में भी सामाजिक अनुबंध सिद्धांत राजनीतिक विज्ञान और शासन व्यवस्था के अध्ययन में अत्यंत प्रासंगिक है।

## संदर्भ सूची (References)

1. Hobbes, Thomas — *Leviathan*
2. Locke, John — *Two Treatises of Government*
3. Rousseau, Jean-Jacques — *The Social Contract*
4. Sabine, George H. — *History of Political Theory*
5. Ebenstein, William — *Great Political Thinkers*
6. Sharma, Prabhudutt — *पाश्चात्य राजनीतिक विचारक*
7. V.D. Mahajan — *Political Theory*
8. O.P. Gauba — *राजनीतिक सिद्धांत*

## Cite this Article

तनु कौशिक<sup>1</sup>, डॉ० बबीता गोयल<sup>2</sup>, “सामाजिक अनुबंध : थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक एवं जीन-जैक रूसो के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-555–562, Volume-05, Issue-01, April-2026, <https://theresearchdialogue.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.



# CERTIFICATE

## of Publication

*This Certificate is proudly presented to*

तनू कौशिक<sup>1</sup>, डॉ० बबीता गोयल<sup>2</sup>

**For publication of Research Paper title**

सामाजिक अनुबंध : थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक एवं जीन-जैक रूसो के विचारों  
का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal  
and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact  
Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani  
Editor- In-chief



Dr. Neeraj Yadav  
Executive-In-Chief- Editor

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper  
must be available online at: <https://theresearchdialogue.com/>